अध्याय–पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय – पंचम

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

भारत एक विकासशील देश है, शिक्षा का व्यापीकरण इस देश की प्रमुख आवश्यकता है, जोकि समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है, और राष्ट्र या समाज की उन्नति में स्त्री व पुरूष दोनों का सहयोगी होना आवश्यक है, अतः राष्ट्र की उन्नति में सहयोग प्रदान करने के लिए बालिकाओं का शिक्षित एवं जागरूक होना आवश्यक है। इस दिशा में शासन द्वारा कई प्रयास किए गए, श्रमिक बच्चे जो शिक्षित है मगर उन्हें योग्य पर्यावरण न मिलने के कारण वह आगे पढाई नही कर पाते उनकी घर की परिस्थिति देखकर उन्हें काम करना पडता है। वह ज्यादा शिक्षित न होकर जल्द ही पैसा कमाना चाहते है। इस कारण उनका ध्यान व्यवसाय में ज्यादा होता है। सामान्य बच्चों का घर के बंधन ही ऐसे होते है जिनको वह पूरा करने के लिए शिक्षा लेकर कुछ अच्छा पद ग्रहण करते है। इस कारण इनकी मानसिक योग्यता भी ज्यादा होती है।

श्रमिक बालकों के लिए स्कूलों में व्यवसायी शिक्षा देना जरूरी है ताकि ये बच्चे भविष्य में अपना रोजगार या आजीविका की तैयारी अच्छे ढंग से कर सकें।

इस शोध से हमें जिन विद्यार्थियों में व्यावसाय की योग्यता पायी जाऐगी उन विद्यार्थियों के माता–पिता और शिक्षक से मिलकर हम उनकी परिस्थिति के अनुसार हम उन्हें शैक्षणिक व्यावसायिक प्रावधानों का प्रस्ताव कर सकते है। ताकि भविष्य में बच्चे रोजगार या आजीविका की तैयारी अच्छी ढंग से कर सकें।

5.1 समस्या का कथन

''श्रमिक विद्यार्थियों एवं सामान्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन''

5.2 शोध कार्य के उद्देश्य

1. श्रमिक विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
2. सामान्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
3. श्रमिक विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन करना।
4. सामान्य विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन करना।
5. श्रमिक विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. सामान्य विद्यार्थी एवं सामान्य विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. विद्यार्थियों को अनेक परिस्थितिनुसार शैक्षणिक व्यावसायिक प्रावधानों का प्रस्ताव करना।

5.3 परिकल्पना

1. श्रमिक बालक एवं सामान्य बालकों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. श्रमिक बालिकाये एवं सामान्य बालिकाओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. श्रमिक बालक एवं सामान्य बालकों में व्यावसायिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. श्रमिक बालिकाये एवं सामान्य बालिकाओं में व्यावसायिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

5.4 चर

शोध समस्या में निम्न चर है।

1. आश्रित चर
    1. मानसिक योग्यता परीक्षण

2. व्यावसायिक रूचि परीक्षण

2. स्वतंत्र चर

1. श्रमिक विद्यार्थी

2. सामान्य विद्यार्थी

5.5 न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्याय में महाराष्ट्र राज्य के अमरावती जिले के 3 स्कूल लिए गये है। न्यादर्श को उद्देश्यपूर्ण प्रकार से चयनित किया गया है।

इस शोधकार्य के अंतर्गत तीन स्कूल से कुल 120 विद्यार्थियों का समावेश किया गया है। जिनमें 60 श्रमिक विद्यार्थी तथा 60 सामान्य विद्यार्थी शामिल है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्न स्कूल का चयन किया गया था।

1. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर विद्यालय, अमरावती
2. गजानन विद्यालय, अमरावती
3. महिन्द्र विद्यालय, अमरावती

5.6 उपकरण

शोध कार्य के लिए जिन उपकरणों को प्रयुक्त किया गया है वे है –

1. डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि परीक्षण प्रपत्र।
2. डॉ. पी. श्रीनिवासन द्वारा निर्मित शाब्दिक बुद्धि परीक्षण।

5.7 प्रयुक्त प्रविधि

शोध समस्या से सम्बन्धित प्रदत्तों की सारणियां बनाई गई है।

5.8 प्रदत्तों का विश्लेषण

प्राप्त आकडों के विश्लेषण के माध्यम से तथ्यात्मक निष्कर्ष निकालने के लिए प्रमुख रूप से 'टी' परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

5.9 शोंध परिणाम

1. श्रमिक एवं सामान्य बालकों की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. श्रमिक बालिकायें एवं सामान्य बालिकाओं की मानसिक योग्यता में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. श्रमिक बालक एवं सामान्य बालकों में व्यावसायिक रूचि में साथ्रक अन्तर पाया गया। अन्य रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. श्रमिक बालिकायें एवं सामान्य बालिकाओं में व्यावसायिक रूचि में सार्थक अन्तर पाया गया। अन्य रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

5.10 निष्कर्ष

एक और आठ साल तक के बच्चे हैं, जिनसे अकल्पनीय करूणाहीन माहौल में भयंकर काम करवाये जाते है, और जिन्हें बाल बजदूर कहा जाता है। यह है भारत दूसरी और आठ साल के बच्चों का एक हिस्सा और है जो वातानुकूलित कक्षाओं में समय बिताते है और खाने की छुटटी होने पर मोबाइल से मम्मियों से बात करते है। यह भी है भारत।''

श्रमिक बच्चों और सामान्य बच्चों में मानसिक योग्यता का मापन करने जो परिणाम मिले। यह निष्कर्ष निकला की श्रमिक बच्चों की मानसिक योग्यता सामान्य बच्चों से कम है। इसका कारण उन्हें स्कूल की पढाई के साथ साथ श्रम भी करना पढ़ता है इस वजह से वह पढाई में ज्यादा वक्त नहीं दे सकते और काम उनका एक हिस्सा बना होता है। आजीविका का एक साधन होता है। इनमें चंचलता कम दिखाई देती है। वह पढ़ना है बस यह ध्यान में लेते है उनमें ऐसा कोई लगाव नहीं दिखाई देता कि वह पढकर कुछ अच्छा पद ग्रहण करें। सामान्य बच्चे मन लगाकर पढ़ते है। और उनका

घर में भी अभिभावक अच्छा ध्यान देते है। श्रमिक बच्चों का घर का माहौल ही ऐसा होता है कि उनपर कोई ध्यान नहीं देते। माता-पिता अशिक्षित होते है और वो भी दिनभर श्रम करते है। इसी कारण बच्चे अपने मन से अपने कार्य करते है। और पढाई में पीछे रहते है और उनकी मानसिक योग्यता कम होती है।

व्यावसायिक रूचि का मापन करने से यह निष्कर्ष मिला की श्रमिक विद्यार्थियों में व्यवसाय के प्रति ज्यादा रूचि दिखाई दी है। उन्होने ऐसी व्यवसाय में रूचि है जो वह आगे करना चाहते है। श्रमिक बालकों के बारे में देखा जाये तो उनकी रूचि साहित्यिक, वैज्ञानिकता प्रशासनिक इन क्षेत्र में बहुत कम पायी गयी है। और औद्योगिक या व्यावसायिक रचनात्मक, सौन्दर्यात्मक या कलात्मक कृषि अनुनयी, सामाजिक गृह सम्बन्ध में ज्यादा पायी गयी है। सामान्य बालकों की साहित्यिक वैज्ञानिकता में पायी गयी बाकी क्षेत्र में भी उनकी रूची है पर कम प्रमाण में है।

बालिकाओं में वैज्ञानिकता, साहित्यिक औद्योगिक व्यावसायिक रूची कम दिखायी गयी है और बाकी सब क्षेत्र में रूचि है। गृह सम्बन्धी और सौन्दर्यात्मक या कलात्मकता में ज्यादा रूचि दिखाई गयी है। बालिकाओं की इन क्षेत्र में रूचि होना एक सहज व स्वाभाविक बात है।

5.11 सुझाव

बालक का विकास किसी भी राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अगर उसका समुचित ढंग से विकास नहीं होता है। इससे बालक तो प्रभावित होता ही है साथ ही राष्ट्र भी कमजोर पडता है। देश को मजबूत और विकास के मार्ग में चलाना हो तो सर्वप्रथम प्रारंभिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण करना होगा। और यह तब ही सफलतापूर्वक होगा जब देश में कोई भी बच्चा अनामांकित नहीं रहेगा, आयु 6 से 14 वर्ष के अंतराल के बच्चे कहीं भी किसी कारखानो, बाजारों खेतो, में अथवा फुटपाथ पर काम करते हुए नजर नहीं आएगें। बच्चों का शारीरिक मनोवैज्ञानिक विकास होगा,

इस बातों को बढ़ावा देने के लिए निम्न सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

- काम करने वाले सभी बच्चों को स्कूल में दर्ज करने की कोशिश युद्ध स्तर पर शासन ने शिक्षा संस्थाओं तथा अशासकीय संस्थाओं ने करना चाहिए।
- बाल श्रमिकों को रोकने के लिए विविध कानून बनाए गए है। लेकिन उनका पालन सही नहीं हो पा रहा है। शासन ने इस पर अधिक जागरूक रहना चाहिए।
- बाल श्रमिक का मुख्य कारण दरिद्रता पाया गया है, इसी की वजह से अभिभावक स्कूल का खर्च नहीं उठा पाते है। तब शासन के लिए बालश्रमिक बालकों का शैक्षिक विकास करने के लिए अलग से छात्रावास की योजना अपनाना चाहिए। तथा पुस्तक, कपडे एवं शैक्षणिक सामग्री बच्चों को निःशुल्क उपलब्ध कराना चाहिए।
- कामकाजी बालकों के लिए कल्याणकारी परियोजनाओं का उन्मूलन करना चाहिए।
- बाल श्रमिक बच्चों को समय पर छात्रवृत्ति दी जाए।
- बालश्रमिक बच्चों को जीवकोपार्जन के लिए रोजगार उन्मुखीकरण प्रशिक्षण दिया जाए।
- इन बच्चों के लिए व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण की रचना की जाये जो उसको पूरा कर अपनी जीविका के लिए या अतिरिक्त कौशल प्राप्त कर सकें।
- विद्यार्थियों की योग्यता और रूचि देखकर उन्हें पढाना चाहिये।
- विद्यार्थियों को उनके रूचि अनुसार व्यावसायिक प्रावधानों का प्रस्ताव करके उन्हें शिक्षा देनी चाहिए।

- विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा का एक भाग होना चाहिए।
- श्रमिक बालकों के मानसिक स्वस्थ्य एवं शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना है।

5.12 भावी शोध हेतु सुझाव

भविष्य के शोध हेतु प्रस्तावित समस्यायें इस दिशा में महत्वपूर्ण अध्ययन के लिये दी जा सकती है। क्योंकि देश में बाल श्रमिक एक गंभीर समस्या धारण कर रही है। जिसके कारण प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण में बाधाएं निर्माण हो रही है शाला त्यागी दर, अपव्यय, अवरोध में बढोतरी हो रही है। इसको नष्ट करने के लिए बाल श्रमिक तथा शाला बाह्य बच्चों से सम्बन्धित अधिक अध्ययन की आवश्यकता है। इस दिशा में शोधकर्ता के अनुसार भावी शोध हेतु कुछ महत्वपूर्ण समस्या इस प्रकार है।

1. बाल श्रमिकों के अभिभावकों का शिक्षा के प्रति प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन।
2. बाल श्रमिकों के प्रति प्राथमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा अवधारणाओं का अध्ययन।
3. बाल श्रमिक एवं सामान्य विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रत्यक्षीकरण पर तुलनात्मक अध्ययन।
4. विद्यालयीन बाल श्रमिक एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।
5. बाल श्रमिकों की जीवन से सम्बन्धित विविध समस्याओं का अध्ययन।
6. बाल श्रमिक विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अभिरूचि।

7. श्रमिक बालकों का वैयक्तिक अध्ययन।

8. श्रमिक विद्यार्थियों की शिक्षा – आज की आवश्यकता।

9. श्रमिक विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति अरूचि कारण तथा निवारण।

10. सामान्य विद्यार्थी एवं श्रमिक विद्यार्थियों की स्वास्थ्य के प्रति सजगता का तुलनात्मक अध्ययन।

संदर्भग्रंथ

संदर्भ ग्रंथ

- अग्रवाल, जे.सी. (2005). राष्ट्रीय शिक्षा नीति, दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।
- कपिल, एच.के.(1984). अनुसंधान विधियाँ, आगरा : हरप्रसाद भार्गव।
- कौल, एल. (2001). शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ली : जंगपुरा, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि.
- गैरेट, एच. (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, नई दिल्लीः पारागान इन्टरनेशनल पब्लिशर्स।
- दैनिक समाचार पत्र, दैनिक भास्कर 9 अक्टूबर 2006, हिन्दुस्तान टाईम्स 13 नवम्बर 2006, सण्डे जागरण 26 नवम्बर 2006।
- परिप्रेक्ष्य (अप्रैल 2005). राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन, नई दिल्ली : संस्थान (नीपा)- 17वीं, श्री अरविंद मार्ग।
- पाण्डेय, के.पी. (2003). शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
- बसू, डी.डी. (1999). भारत का संविधान-एक परिचय आगरा, नागपूर, नई दिल्ली : वाधवा एण्ड कम्पनी विधि प्रकाशक।
- बुच, एम.बी.(2000). फिफ्थ सर्वे ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च (1988-92). वाल्युम-2 नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.।
- एन.सी.ई.आर.टी. (2005). नेशनल क्यूरीकूलम प्रेम वर्क फॉर स्कूल एज्यूकेशन, नई दिल्ली : एन.सी.ई.आर.टी.
- राय, पी. (2005). अनुसंधान परिचय, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, शिक्षा सम्बन्धी प्रकाशन।
- वर्मा, आर.एस. (1989-90). शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल शिक्षा सम्बन्धी प्रकाशन।
- वाकडे, एच.एन. (2003). बालश्रमिकों का शिक्षा के प्रति प्रत्यक्षीकरणः एक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध भोपाल : क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान।

- शर्मा, एस. (1993). नगरीय व उप–नगरीय क्षेत्रों में अध्ययनरत बालिकाओं की मानसिक योग्यता व व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध भोपाल : क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान।

- सिंह. ए. (2005). शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स)।

- स्कूल टुडे, (नव. 2002, जन. 2003). शिक्षा जगत का सजग प्रहरी हिन्दी मासिक, मध्यप्रदेश शासन के शिक्षा विभाग तथा राजीव गांधी प्राथमिक शिक्षा मिशन द्वारा अनुमोदित पत्रिका।

- डॉ. श्रीवास्तव, डी.एन. एवं डॉ. वर्मा, पी. (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

- शर्मा, एस. (1993). नगरीय व उप-नगरीय क्षेत्रों में अध्ययनरत बालिकाओं की मानसिक योग्यता व व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध भोपाल : क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान।

- सिंह. ए. (2005). शिक्षा मनोविज्ञान, पटना : भारती भवन (पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्युटर्स)।

- स्कूल टुडे, (नव. 2002, जन. 2003). शिक्षा जगत का सजग प्रहरी हिन्दी मासिक, मध्यप्रदेश शासन के शिक्षा विभाग तथा राजीव गांधी प्राथमिक शिक्षा मिशन द्वारा अनुमोदित पत्रिका।

- डॉ. श्रीवास्तव, डी.एन. एवं डॉ. वर्मा, पी. (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकीय, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।